होली

होली त्यौहार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह त्यौहार दो दिन चलता है। पहले दिन होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते है। दूसरे दिन लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल आदि डालते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं, और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि होली के दिन लोग पुरानी दुश्मनी को भूल कर गले मिलते हैं और फिर से दोस्त बन जाते हैं। बच्चे-बूढ़े सभी लोग संकोच और रूढ़ियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ़ रंगों की फुहार फूट पड़ती है।

मशहूर मुस्लिम पर्यटक अलबरूनी ने भी अपने यात्रा-संस्मरण में होली का वर्णन किया है। भारत के अनेक मुस्लिम कवियों ने अपनी रचनाओं में इस बात का उल्लेख किया है कि होली केवल हिंदू ही नहीं मुसलमान भी मनाते हैं। अकबर जोधाबाई के साथ तथा जहाँगीर नूरजहाँ के साथ होली खेलते थे। इतिहास में वर्णन है कि शाहजहाँ के ज़माने में होली को *ईद-ए-गुलाबी* या *आब-ए-पाशी* (रंगों की बौछार) कहा जाता था। अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र के बारे में प्रसिद्ध है कि होली पर उनके मंत्री उन्हें रंग लगाने जाया करते थे।

ईश्वर भक्त प्रहलाद की याद में इस दिन होली जलाई जाती है। भारतीय ज्योतिष के अनुसार होली के दूसरे दिन से नव वर्ष का भी आरंभ माना जाता है। इसप्रकार यह त्यौहार नव संवत का आरंभ तथा वसंतागमन का प्रतीक भी है। होली के दिन पहला काम किसी चौराहे पर झंडा या डंडा गाड़ना होता है। इस दिन चौराहों पर तथा जहाँ कहीं अग्नि के लिए लकड़ी एकत्र की जाती है, वहाँ होली जलाई जाती है। इसमें लकड़ियाँ और उपले प्रमुख रूप से होते हैं। इस आग में नई फसल की गेहूँ की बालियों और चने के होले को भी भूना जाता है। होलिका-दहन समाज की समस्त बुराइयों के अंत का प्रतीक है। यह बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का सूचक है। गाँवों में लोग देर रात तक होली के गीत गाते हैं तथा नाचते हैं।

होली से अगले दिन लोग रंगों से खेलते हैं। सुबह होते ही सब अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं। गुलाल और रंगों से सबका स्वागत किया जाता है। लोग अपनी ईर्ष्या-द्वेष की भावना भुलाकर प्रेमपूर्वक गले मिलते हैं तथा एक-दूसरे को रंग लगाते हैं। इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। सारा समाज होली के रंग में रंगकर एक-सा बन जाता है। रंग खेलने के बाद देर दोपहर तक लोग नहाते हैं और शाम को नए कपड़े पहनकर सबसे मिलने जाते हैं। होली के दिन घरों में खीर, पूरी तथा अनेक मिठाइयाँ बनाई जाती हैं। बेसन के सेव और दहीबड़े भी सामान्य रूप से उत्तर प्रदेश में रहने वाले हर परिवार में बनाए व खिलाए जाते हैं। होली के दिन लोग भाँग और ठंडाई पीते हैं। यह त्यौहार ख़ासकर उत्तर भारत में मनाया जाता है।